कला संग्रहालयों पर डिजिटल प्रौद्योगिकी और सोशल मीडिया का प्रभाव

सोमा घोष

भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के तहत सालार जंग संग्रहालय, हैदराबाद में लाइब्रेरियन और सोशल मीडिया अधिकारी के रूप में कार्यरत। वे कला इतिहास और पुस्तकालयों पर लिखती हैं और सालार जंग संग्रहालय के लिए दो मोनोग्राफ भी लिख चुकी हैं। ईमेल: somaghosh1133@gmail.com

यह लेख इस बारे में बात करता है कि भारत सहित दुनिया भर में 'कला संग्रहालय' कितने महत्वपूर्ण हैं, उनके संग्रह जो उनके देशों और अन्य क्षेत्रों के कला इतिहास, संस्कृति और विरासत के बारे में बात करते हैं, और जो 21वीं सदी में अपनी उपस्थिति और प्रासंगिकता को अधिक से अधिक दर्शाने के लिए डिजिटलीकरण और सोशल मीडिया का उपयोग कर रहे हैं। 21वीं सदी महत्वपूर्ण कला संग्रहालयों की गणना करते समय, यह चर्चा की जाती है कि कैसे सोशल मीडिया वस्तुओं और कलाकृतियों के समूहों के बारे में चयनात्मक प्रसार और कहानियों के माध्यम से एक संग्रहालय के अस्तित्व और अनुभव में अंतर ला रहा है, और घटनाओं और अन्य समाचारों के बारे में ऑनलाइन जनता को सूचित कर रहा है। यह एक महत्वपूर्ण कला संग्रहालय, अर्थात् सालार जंग संग्रहालय, हैदराबाद है और इस दिशा में अपने प्रयासों पर ध्यान केंद्रित करता है ताकि यह भविष्य में डिजिटल मीडिया पर अपनी उपस्थिति दर्ज कर सके।

संग्रहालय शक्तिशाली स्थान हैं। जीवन के सभी क्षेत्रों से लोग इसे समझने और इसके बारे में खुद को जागरूक करने के लिए एक तरह के क्यूरेटेड संग्रह को देखने आते हैं। संग्रहालयों में, 'कला' संग्रहालय विशेष संग्रहालय हैं जो दुनिया भर या विशिष्ट क्षेत्रों से कला एकत्र करते हैं, संरक्षित करते हैं और प्रदर्शित करते हैं। दुनिया भर में कई देशों में कला संग्रहालय मौजूद हैं। दुनिया भर में अनगिनत कला संग्रहालय हैं, प्रत्येक का अपना अनूठा संग्रह और फोकस है। कला संग्रहालय एक सार्वजनिक या निजी संस्थान है जो जनता की शिक्षा और आनंद के लिए कला के कार्यों को एकत्रित, संरक्षित, प्रदर्शित और व्याख्या करता है। इन संस्थानों में आम तौर पर पेंटिंग, मूर्तियां, फर्नीचर, चित्र, प्रिंट, तस्वीरें, कपड़ा, चीनी मिट्टी की चीज़ें और सजावटी कला सहित विविध प्रकार की कलात्मक वस्तुएं होती हैं।

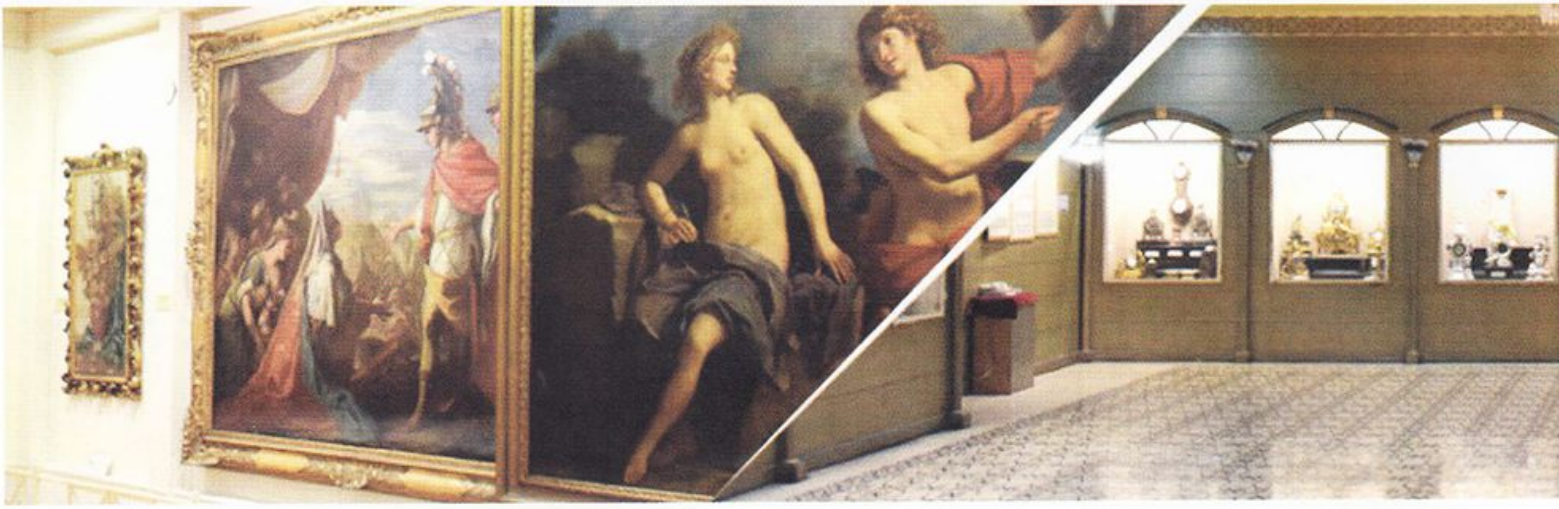

भारत में संग्रहालय

भारत कई कला संग्रहालयों का घर है जो देश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और कलात्मक परंपराओं को प्रदर्शित करते हैं। भारत में कुछ उल्लेखनीय कला संग्रहालयों में राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली शामिल है: राष्ट्रीय संग्रहालय भारत के सबसे बड़े संग्रहालयों में से एक है, जिसमें भारतीय इतिहास के विभिन्न कालखंडों की कला, कलाकृतियों और पुरावशेषों का विशाल संग्रह है। इसमें मूर्तिकला, पेंटिंग, सजावटी कला, सिक्के और पांडुलिपियों का संग्रह है। नैशनल गैलेरी ऑफ मॉडर्न आर्ट (एनजीएमए), नई दिल्ली: 1954 में स्थापित, एनजीएमए भारत के प्रमुख कला संस्थानों में से एक है, जो आधुनिक और समकालीन भारतीय कला का प्रदर्शन करता है। इसमें प्रसिद्ध भारतीय कलाकारों द्वारा चित्रों, मूर्तियों और अन्य कलाकृतियों का एक व्यापक संग्रह है। सालार जंग संग्रहालय, हैदराबाद: मूसी नदी के तट पर स्थित है, सालार जंग संग्रहालय कला और प्राचीन वस्तुओं का दुनिया भर में सबसे बड़े निजी संग्रहों में से एक है। इसके संग्रह में विभिन्न संस्कृतियों और सभ्यताओं की पेंटिंग, मूर्तियां, वस्त्र, चीनी मिट्टी की चीज़ें और फर्नीचर शामिल हैं। छत्रपति शिवाजी महाराज वास्तु संग्रहालय (पूर्व में प्रिंस ऑफ वेल्स संग्रहालय), मुंबई: मुंबई के इस संग्रहालय में भारतीय कला का एक प्रभावशाली संग्रह है, जिसमें भारतीय इतिहास के विभिन्न कालखंडों की मूर्तियां, लघु चित्र, सजावटी कला और कलाकृतियां शामिल हैं। भारतीय संग्रहालय, कोलकाता: 1814 में स्थापित भारतीय संग्रहालय भारत का सबसे पुराना और बड़ा संग्रहालय है। इसमें कला और कलाकृतियों का एक विशाल संग्रह है, जिसमें मूर्तियां, पेंटिंग, सिक्के और पुरातात्विक खोज शामिल हैं, जो भारत और अन्य एशियाई देशों की सांस्कृतिक विरासत का प्रतिनिधित्व करते हैं। सरकारी संग्रहालय और आर्ट गैलरी, चंडीगढ़: चंडीगढ़ के इस संग्रहालय में गांधार मूर्तियां, लघु चित्र और समकालीन भारतीय कला, कलाकृतियों का एक विविध संग्रह है। इसमें सिंधु घाटी सभ्यता की कलाकृतियों का एक महत्वपूर्ण संग्रह भी है। जहांगीर आर्ट गैलरी, मुंबई: 1952 में स्थापित, जहांगीर आर्ट गैलरी मुंबई की सबसे प्रमुख कला दीर्घाओं में से एक है। यह उभरते और स्थापित दोनों भारतीय कलाकारों के कार्यों को प्रदर्शित करने वाली नियमित प्रदर्शनियों का आयोजन करता है। इस तरह के कुछ उदाहरण हैं, और पूरे भारत में कई कला संग्रहालय और गैलरी हैं, जिनमें से प्रत्येक देश की कलात्मक विरासत पर एक अद्वितीय परिप्रेक्ष्य पेश करते हैं।

सालार जंग संग्रहालय की कहानी

हैदराबाद में सालार जंग संग्रहालय एक समृद्ध और आकर्षक इतिहास समेटे हुए है, जो सालार जंग परिवार की विरासत और कला संग्रह के प्रति उनके जुनून से जुड़ा हुआ है। इसकी शुरुआत नवाब मीर यूसुफ अली खान द्वारा संग्रहित एक निजी संग्रह के रूप में हुई, जो सालार जंग III के नाम से लोकप्रिय थे, जिन्होंने 1912 से 1914 तक निज़ाम शासन के तहत हैदराबाद के प्रधान मंत्री के रूप में कार्य किया।

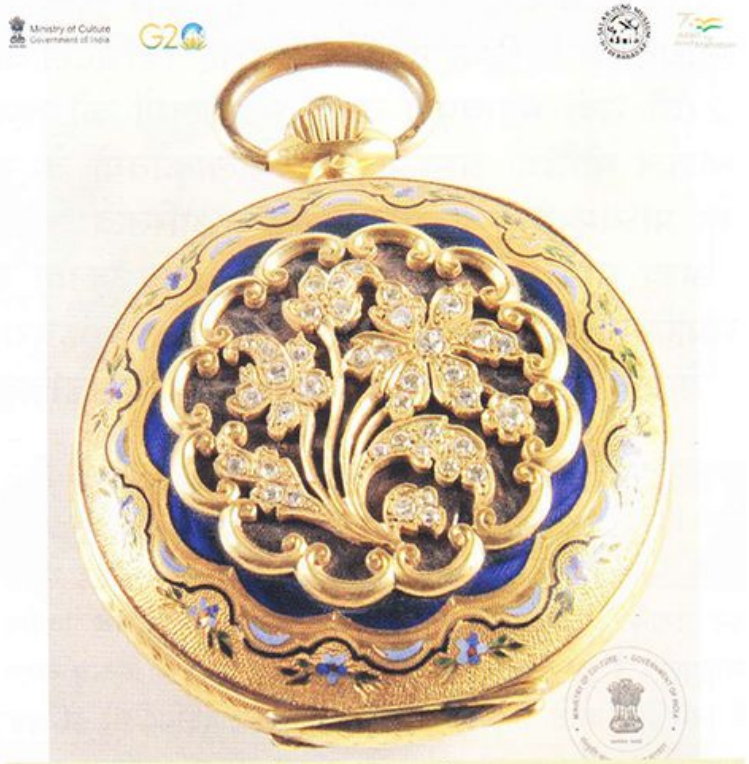

पॉकेट घड़ी, 1895 ए.डी.

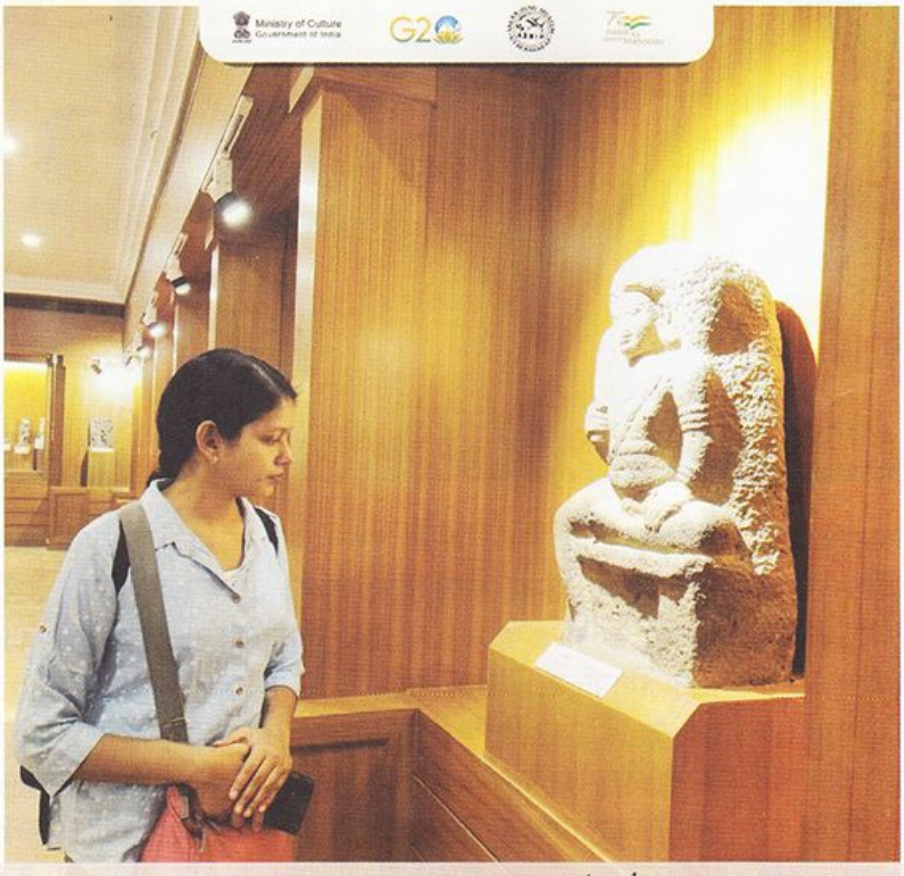

#TimelessMoments at SJM

पहलों के बारे में विवरण दुनिया भर के लोगों में शोध रुचि पैदा करता है। संग्रहालय संग्रह के बारे में 'ऑनलाइन प्रदर्शनियां' एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में काम कर रही हैं जो जनता को परिचित और उत्साहित करती है। वेबसाइट में लाइब्रेरी कैटलॉग भी है। इसके अलावा, सालार जंग संग्रहालय लाइब्रेरी की डिजिटलीकृत पुस्तकें Indianculture.gov.in पर 'दुर्लभ पुस्तकें' और 'ई-पुस्तकें' विकल्पों पर उपलब्ध हैं। संग्रहालय 'गूगल आर्ट्स एण्ड कल्चर ' के साथ एक भागीदार संस्थान है, जिस पर इसकी 52 ऑनलाइन प्रदर्शनियां हैं। यह डिजिटल तकनीक के उपयोग से संभव हुआ है। पोर्टल का लिंक https://artsandculture.google.com/partner/salar-jung-museum है। 'ऑनलाइन प्रदर्शनियां' विषयगत हैं और इसमें वस्तुओं या विषयों के समूहों से संबंधित कहानियां हैं ताकि जनता चलते हुए भी देख सके। ये प्रदर्शनियां कला और संस्कृति के प्रति उत्साही लोगों के लिए रुचिकर हैं जिनके पास समय कम है और वे आसानी से संग्रहालय नहीं जा सकते। यह 'म्यूजियमफ्रॉमहोम' के अनुभव को भी जोड़ता है जो एक अवधारणा है जो कोविड महामारी के कारण उत्पन्न हुई और इसे जारी रखी जा रही है। कुछ प्रदर्शनियां हैं - मैग्निफ़िसेंट जेड्स, हाउ चेस चेंज्ड द वर्ल्ड, पहाड़ी पेंटिंग्स, एपिक्स इन आर्ट, कलर मीट्स साउंड, वुमन इन डेक्कनी पेंटिंग आदि। कोई भी सालार जंग संग्रहालय की सभी कलाकृतियों को छवि और विवरण के साथ museumsofIndia.gov.in पर देख सकता है।

संग्रहालय और सोशल मीडिया

सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म संग्रहालयों को दर्शकों से जुड़ने, उन्हें नए तरीकों से जोड़ने और उनके शैक्षिक और सांस्कृतिक मिशनों को पूरा करने के लिए शक्तिशाली उपकरण प्रदान करते हैं। आइए इस महत्वपूर्ण संबंध पर गहराई से नज़र डालें:

- **बढ़ी हुई पहुंच और दृश्यता** - सोशल मीडिया, संग्रहालयों को व्यापक दर्शकों तक पहुंचने की अनुमति देता है, जिसमें युवा पीढ़ी, अपने भौगोलिक क्षेत्र से बाहर के लोग और वे लोग शामिल हैं जो आमतौर पर संग्रहालय में जाने पर विचार नहीं करते हैं।
- **बढ़ी हुई सहभागिता** - इंस्टाग्राम, ट्विटर जैसे प्लेटफ़ॉर्म संग्रहालयों को कहानियां, पर्दे के पीछे की झलकियां, शैक्षिक सामग्री और इंटरैक्टिव अनुभव साझा करने में सक्षम बनाते हैं, जिससे आगंतुकों के साथ गहरी सहभागिता को बढ़ावा मिलता है।
- **सामुदायिक भवन** - संग्रहालय, सोशल मीडिया के माध्यम से ऑनलाइन समुदाय बना सकते हैं, बातचीत को बढ़ावा दे सकते हैं, फीडबैक को प्रोत्साहित कर सकते हैं और आगंतुकों के बीच अपनेपन की भावना पैदा कर सकते हैं।
- **घटनाओं का प्रचार** - सोशल मीडिया आगामी घटनाओं, प्रदर्शनियों और कार्यक्रमों को बढ़ावा देने, उपस्थिति और रुचि बढ़ाने के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण हैं।

हालांकि, अधिकांश कला संग्रहालयों को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है -

1. **प्रतिस्पर्धा** - सोशल मीडिया एक भीड़-भाड़ वाली जगह है, और संग्रहालयों को प्रभावी ढंग से सामने आने की

जरूरत है।

2. **सामग्री निर्माण** - आकर्षक और प्रासंगिक सामग्री की सुसंगत योजना बनाना।
3. **पहुंच** - संग्रहालयों को यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि उनकी सोशल मीडिया उपस्थिति विविध दर्शकों के लिए सुलभ हो और विभिन्न शिक्षण शैलियों की पहुंच संभव बनाए।
4. **प्रभावशीलता को मापना** - सोशल मीडिया प्रयासों के प्रभाव को ट्रैक करने और इसके मूल्य को प्रदर्शित करने के लिए विशिष्ट मैट्रिक्स और विश्लेषण की आवश्यकता होती है।
5. **आभासी उपस्थिति** - संग्रहालय, आभासी पर्यटन और अनुभव प्रदान करने के लिए लाइव वीडियो का तेजी से उपयोग कर रहे हैं, जिससे उनके संग्रह दूरस्थ रूप से पहुंच संभव हो।
6. **सोशल मीडिया प्रभावित करने वाले** - प्रासंगिक प्रभावशाली लोगों के साथ सहयोग होने से पहुंच व्यापक बन सकती है और नए दर्शकों को आकर्षित कर सकती है।
7. **नए मंच** - नए प्लेटफार्मों के बारे में सूचित रहना और तदनुसार रणनीतियों को अपनाना संग्रहालयों के लिए प्रासंगिक बने रहने की कुंजी है।

हैदराबाद के सालार जंग संग्रहालय ने दुनिया भर में कला इतिहास के प्रति उत्साही लोगों के लिए अपने मीडिया हैंडल और पोर्टल के माध्यम से डिजिटल रूप से ऑनलाइन स्थान पाया है।

कला संग्रहालय सांस्कृतिक केंद्र और हॉटस्पॉट के रूप में काम करते हैं जहां आगंतुक क्यूरेटेड प्रदर्शनियों, व्याख्यान, कार्यशालाओं और विशेष कार्यक्रमों जैसे शैक्षिक कार्यक्रमों के माध्यम से कला, इतिहास और विभिन्न संस्कृतियों के साथ जुड़ सकते हैं और सीख सकते हैं। वे सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने, रचनात्मकता को बढ़ावा देने, नए विचारों का पोषण करने और विविध समुदायों के बीच संवाद और समझ को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ❑

(चित्रों का स्रोत : सालार जंग संग्रहालय, संस्कृति मंत्रालय)

प्रकाशन विभाग के विक्रय केंद्र

नई दिल्ली	पुस्तक दीर्घा, सूचना भवन, सीजीओ कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड	110003	011-24367260
नवी मुंबई	701, सी-विंग, केन्द्रीय सदन, बेलापुर	400614	022-27570686
कोलकाता	8, एस्प्लेनेड ईस्ट	700069	033-22488030
चेन्नई	'ए' विंग, राजाजी भवन, बसंत नगर	600090	044-24917673
तिरुवनंतपुरम	प्रेस रोड, गवर्नमेंट प्रेस के निकट	695001	0471-2330650
हैदराबाद	कमरा सं. 204, दूसरा तल, सीजीओ टावर, कवाड़ीगुड़ा, सिकंदराबाद	500080	040-27535383
बेंगलुरू	फर्स्ट फ्लोर, 'एफ' विंग, केंद्रीय सदन, कोरामंगला	560034	080-25537244
पटना	बिहार राज्य कोऑपरेटिव बैंक भवन, अशोक राजपथ	800004	0612-2675823
लखनऊ	हॉल सं-1, दूसरा तल, केंद्रीय भवन, सेक्टर-एच, अलीगंज	226024	0522-2325455